AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

आर्य समाज का 19वीं शताब्दी में सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधार के कदम के रूप में

ARYA SAMAJ WAS A STEP TOWARDS SOCIAL, POLITICAL AND RELIGIOUS REFORM IN THE 19TH CENTURY

गोपाल चौधरी[1], प्रो. (डॉ.) दिनेश मंडोत[2]

[1]शोधछात्र, इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

[2]प्रो., इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

Gopal Choudhary[1], Prof. (Dr.) Dinesh Mandot[2]

[1]Research Scholar, Department of History, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan, India

[2]Prof., Department of History, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan, India

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित आर्य समाज ने 19वीं सदी के भारत के सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह शोध पत्र आर्य समाज द्वारा शुरू किए गए व्यापक सुधारों की पड़ताल करता है, जो सामाजिक न्याय, राजनीतिक सक्रियता और धार्मिक शुद्धिकरण पर उनके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करता है। सामाजिक रूप से, आर्य समाज ने बाल विवाह, जाति व्यवस्था और विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार जैसी प्रतिगामी प्रथाओं का कड़ा विरोध किया, महिलाओं की शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह की वकालत की। राजनीतिक रूप से, इसने स्वराज (स्व–शासन) के कारण का समर्थन किया और स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया, जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ बढ़ती राष्ट्रवादी भावना में योगदान दिया। धार्मिक रूप से, आर्य समाज ने वेदों की शिक्षाओं की ओर लौटकर, मूर्तिपूजा को अस्वीकार करके और एकेश्वरवाद को बढ़ावा देकर हिंदू धर्म को शुद्ध करने का प्रयास किया। स्वामी दयानंद के मौलिक कार्य, सत्यार्थ प्रकाश ने इन सिद्धांतों को समाहित किया, समकालीन सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते हुए वैदिक रूढ़िवाद की ओर लौटने पर जोर दिया। आर्य समाज के सुधारात्मक प्रयासों ने भारत के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, राष्ट्रीय एकता और प्रगतिशील विचार की भावना को बढ़ावा दिया, जिसने स्वतंत्रता और सामाजिक समानता के लिए भविष्य के आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त किया।

मुख्यशब्द: स्वतंत्रता, सामाजिक रूप से, धार्मिक, जाति व्यवस्था

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

1. परिचय

19वीं शताब्दी के भारत में धर्म और समाज में सुधार गतिविधियों की एक मजबूत लहर देखी गई। शिक्षित युवा भारतीयों द्वारा धर्म और समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया गया। कारण, समानता, स्वतंत्रता और मानवता के पश्चिमी विचारों ने उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने अपनी संस्कृति के दोषों को दूर करने का प्रयास किया। वे भारतीय संस्कृति के गौरव को पुनर्जीवित करना चाहते थे। इसलिए हम 19वीं सदी के भारत के सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन को भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन कहते हैं। राजा राममोहन राय इस आंदोलन के अग्रणी थे।

19वीं सदी को भारत में धार्मिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण की सदी माना गया है। इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से आधुनिक तत्कालीन युवा मन चिन्तनशील हो उठा, तरुण व वृद्ध सभी इस विषय पर सोचने के लिए मजबूर हुए। यद्यपि कम्पनी ने भारत के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के प्रति संयम की नीति का पालन किया, लेकिन ऐसा उसने अपने राजनैतिक हित के लिए किया। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित लोगों ने हिन्दू सामाजिक रचना, धर्म, रीति–रिवाज व परम्पराओं को तर्क की कसौटी पर कसना आरम्भ कर दिया। इससे सामाजिक व धार्मिक आन्दोलन का जन्म हुआ। (1)

1.1 नवजागरण की शुरुआत

भारत में ब्रिटिश सत्ता के पैर जमने के बाद यहाँ का जनमानस पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति के सम्पर्क में आया, परिणामस्वरूप नवजागरण की शुरुआत हुई। भारतीय समाज की आंतरिक कमजोरियों का पक्ष उजागर हुआ। अंग्रेजी शिक्षा ने भारत के धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया। अंग्रेजी शिक्षा व संस्कृति का प्रभाव सर्वप्रथम भारतीय मध्यम वर्ग पर पड़ा। तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं वाह्म आडम्बरों को समाप्त करने में पाश्चत्य शिक्षा ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस शिक्षा के प्रभाव में आकर ही भारतीयों ने विदेशी सभ्यता और साहित्य के बारे में ढेर सारी जानकारियाँ एकत्र कीं तथा अपनी सभ्यता से उनकी तुलना कर सच्चाई को जाना।

प्रारम्भ में अर्थात् 1813 ई. तक कम्पनी प्रशासन ने भारत के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया, क्योंकि वे सदैव इस बात से सशंकित रहते थे कि, इन मामलों में हस्तक्षेप करने से रूढ़िवादी भारतीय लोग कम्पनी की सत्ता के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु 1813 ई. के बाद ब्रिटिश शासन ने अपने औद्योगिक हितों एवं व्यापारिक लाभ के लिए सीमित हस्तक्षेप प्रारम्भ कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप कालान्तर में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों को जन्म हुआ। 'हीगल' के मतानुसार–''पुनर्जागरण के बिना कोई भी धर्म सम्भव नहीं(2)।

1.2 हिन्दू सुधार आन्दोलन

इसके अंतर्गत हिन्दू धर्म तथा समाज में सुधार हेतु कई आन्दोलनों को चलाया गया, जिनमें से कुछ इस प्रकार से हैं–

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

1.2.1 ब्रह्मसमाज

ब्रह्मसमाज हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रथम धर्म–सुधार आन्दोलन था। इसके संस्थापक राजा राममोहन राय थे, उन्होंने 20 अगस्त, 1828 ई. में इसकी स्थापना कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में की थी। इसका मुख्य उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराईयों, जैसे– सती प्रथा, बहुविवाह, वेश्यागमन, जातिवाद, अस्पृश्यता आदि को समाप्त करना।

राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का पिता माना जाता है। राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त मध्ययुगीन बुराईयों को दूर करने के लिए आन्दोलन चलाया। देवेन्द्रनाथ टैगोर ने भी ब्रह्मसमाज को अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं। उन्होंने ही केशवचन्द्र सेन को ब्रह्मसमाज का आचार्य नियुक्त किया था। केशवचन्द्र सेन का बहुत अधिक उदारवादी द्रष्टिकोण ही आगे चलकर ब्रह्मसमाज के विभाजन का कारण बना। राजा राममोहन राय को भारत में पत्रकारिता का अग्रदूत माना जाता है। इन्होंने समाचार–पत्रों की स्वतंत्रता का समर्थन किया था। भारत की स्वतंत्रता के बारे में उनका मत था कि, भारत को तुरन्त स्वतंत्रता न लेकर प्रशासन में हिस्सेदारी लेनी चाहिए[3]।

1.2.2 आदि ब्रह्मसमाज

आदि ब्रह्मसमाज की स्थापना ब्रह्मसमाज के विभाजन के उपरान्त आचार्य केशवचन्द्र सेन द्वारा की गई थी। आदि ब्रह्मसमाज की स्थापना कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में हुई थी। ब्रह्मसमाज का 1865 ई. में विखण्डन हो चुका था। केशवचन्द्र सेन को देवेन्द्रनाथ टैगोर ने आचार्य के पद से हटा दिया। फलतः केशवचन्द्र सेन ने 'भारतीय ब्रह्म समाज' की स्थापना की, और इस प्रकार पूर्व का ब्रह्मसमाज 'आदि ब्रह्मसमाज' के नाम से प्रसिद्ध हुआ[4]।

1.2.3 प्रार्थना समाज

प्रार्थना समाज की स्थापना वर्ष 1867 ई. में बम्बई (महाराष्ट्र) में आचार्य केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से महादेव गोविन्द रानाडे, डॉ. आत्माराम पांडुरंग, चन्द्रावरकर आदि द्वारा की गई थी। जी.आर. भण्डारकर प्रार्थना समाज के अग्रणी नेता थे। प्रार्थना समाज का मुख्य उद्देश्य जाति प्रथा का विरोध, स्त्री–पुरुष विवाह की आयु में वृद्धि, विधवा–विवाह, स्त्री शिक्षा आदि को प्रोत्साहन प्रदान करना था[5] ।

1.2.4 आर्य समाज

10 अप्रैल सन् 1875 ई. में बम्बई में दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की। इसका उद्देश्य वैदिक धर्म को पुनः शुद्ध रूप से स्थापित करने का प्रयास, भारत को धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक रूप से एक सूत्र में बांधने का संकल्प लिया और पश्चि मी सभ्यता के प्रभाव को समाप्त करना आदि था। 1824 ई. में गुजरात के मौरवी नामक स्थान पर पैदा हुए स्वामी दयानंद को बचपन में 'मूलशंकर' के नाम से जाना जाता था। 21 वर्ष की अवस्था में मूलशंकर ने गृह त्याग कर घुमक्कड़ों का जीवन स्वीकार किया। 24 वर्ष की अवस्था में उनकी मुलाकात दण्डी स्वामी पूर्णानंद से हुई। इन्हीं से सन्न्यास की दीक्षा लेकर मूलशंकर ने

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

दण्ड धारण किया। दीक्षा प्रदान करने के बाद दण्डी स्वामी पूर्णानंद ने मूलशंकर का नाम 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' रखा(6)।

1.2.5 रामकृष्ण मिशन

'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने 1 मई, 1897 ई. में की थी। उनका उद्देश्य ऐसे साधुओं और संन्यासियों को संगठित करना था, जो रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं में गहरी आस्था रखें, उनके उपदेशों को जनसाधारण तक पहुँचा सकें और संतप्त, दुःखी एवं पीड़ित मानव जाति की निःस्वार्थ सेवा कर सकें । 1893 ई. में स्वामी विवेकानन्द ने शिकांगो में हुई धर्म संसद में भाग लेकर पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति एवं दर्शन से अवगत कराया। धर्म संसद में स्वामी जी ने अपने भाषण में भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद के मध्य संतुलन बनाने की बात कही। विवेकानन्द ने पूरे संसार के लिए एक ऐसी संस्कृति की कल्पना की, जो पश्चिमी देशों के भौतिकवाद एवं पूर्वी देशों के अध्यात्मवाद के मध्य संतुलन बनाने की बात कर सके तथा सम्पूर्ण विश्व को खुशियाँ प्रदान कर सके (7)।

1.2.6 थियोसोफिकल सोसाइटी

'थियोसोफिकल सोसाइटी' की स्थापना वर्ष 1875 ई. में न्यूयॉर्क (संयुक्त राज्य अमरीका) में तथा इसके बाद 1886 ई. में अडयार (चेन्नई, भारत) में की गई थी। इसके संस्थापक 'मैडम हेलना पेट्रोवना' एवं 'कर्नल हेनरी स्टील ऑल्काट' थे। थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्य उद्देश्य धर्म को आधार बनाकर समाज सेवा करना, धार्मिक एवं भाईचारे की भावना को फैलाना, प्राचीन धर्म, दर्शन एवं विज्ञान के अध्ययन में सहयोग करना आदि था। भारत में इसकी व्यापक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने का श्रेय एनी बेसेंट को दिया जाता है(8)।

1.2.7 यंग बंगाल आन्दोलन

यंग बंगाल आन्दोलन की स्थापना वर्ष 1828 ई. में बंगाल में की गई थी। इसके संस्थापक 'हेनरी विविनय डेरोजियो' (1809–1831 ई.) थे। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य प्रेस की स्वतन्त्रता, जमींदारों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों से किसानो का संरक्षण, सरकारी नौकरियों में ऊँचे वेतनमान के अन्तर्गत भारतीय लोगों को नौकरी दिलवाना था। एंग्लों–इंडियन डेरोजियो 'हिन्दू कॉलेज' में अध्यापक थे। वे फ्राँस की महान् क्रांति से बहुत प्रभावित थे।

1.3 मुस्लिम सुधार आन्दोलन

मुस्लिम समाज तथा इस्लाम धर्म में सुधार के लिए गये आन्दोलन इस प्रकार से थे–

1.3.1 अलीगढ़ आन्दोलन

'अलीगढ़ आन्दोलन' की शुरुआत अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) से हुई थी। इस आन्दोलन के संस्थापक सर सैय्यद अहमद खाँ थे। सर सैय्यद अहमद खाँ के अतिरिक्त इस आन्दोलन के अन्य प्रमुख नेता थे– नजीर अहमद, चिराग अली, अल्ताफ हुसैन, मौलाना शिबली नोमानी आदि। दिल्ली में पैदा हुए सैय्यद अहमद ने 1839 ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी में नौकरी कर ली। कम्पनी की न्यायिक सेवा में कार्य करते हुए 1857 ई. के विद्रोह में उन्होंने कम्पनी का साथ दिया। 1870 ई. के बाद प्रकाशित 'डब्ल्यू. हण्टर' की पुस्तक 'इण्डियन मुसलमान' में

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

सरकार को यह सलाह दी गई थी कि वे मुसलमानों से समझौता कर तथा उन्हें कुछ रियायतें देकर अपनी ओर मिलाये [9]।

1.3.2 वहाबी आन्दोलन

वहाबी आन्दोलन 1830 ई. से प्रारम्भ होकर 1860 ई. चलता रहा था। इतने लम्बे समय तक चलने वाले 'वहाबी आन्दोलन' के प्रवर्तक रायबरेली के 'सैय्यद अहमद' थे। यह विद्रोह मूल रूप से मुस्लिम सुधारवादी आन्दोलन था, जो उत्तर पश्चिम, पूर्वी भारत तथा मध्य भारत में सक्रिय था। सैय्यद अहमद इस्लाम धर्म में हुए सभी परिवर्तनों तथा सुधारों के विरुद्ध थे। उनकी इच्छा हजरत मोहम्मद के समय के इस्लाम धर्म को पुनःस्थापित करने की थी।

1.3.3 अहमदिया आन्दोलन

अहमदिया आन्दोलन की स्थापना वर्ष 1889 ई. में की गई थी। इसकी स्थापना गुरदासपुर (पंजाब) के 'कादिया' नामक स्थान पर की गई। इसका मुख्य उद्देश्य मुसलमानों में इस्लाम धर्म के सच्चे स्वरूप को बहाल करना एवं मुस्लिमों में आधुनिक औद्योगिक और तकनीकी प्रगति को धार्मिक मान्यता देना था। अहमदिया आन्दोलन की स्थापना 'मिर्जा गुलाम अहमद' (1838–1908 ई.) द्वारा 19वीं शताब्दी के अंत में की गई थी।

1.3.4 देवबन्द स्कूल

देवबन्द स्कूल की स्थापना मुहम्मद कासिम ननौत्वी (1832–1880 ई.) एवं रशीद अहमद गंगोही (1828–1905 ई.) द्वारा की गई थी। इस स्कूल की शुरुआत 1866–1867 ई. में देवबन्द, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) से की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम सम्प्रदाय के लिए धार्मिक नेता तैयार करना, विद्यालय के पाठ्यक्रम में अंग्रेजी शिक्षा एवं पश्चिमी संस्कृति को प्रतिबन्धित करना, मुस्लिम सम्प्रदाय का नैतिक एवं धार्मिक पुनरुद्धार करना तथा अंग्रेज सरकार के साथ असहयोग करना था।

1.4 सामाजिक सुधार अधिनियम

सामाजिक सुधार अधिनियम मुख्यतः 19वीं शताब्दी में लाये गए। इस शताब्दी के सुधार आन्दोलन ने केवल धार्मिक सुधार के क्षेत्र को ही नहीं, बल्कि समाज सुधार को भी अपना लक्ष्य बनाया। तत्कालीन समाज में व्याप्त ऐसी कई कुप्रथाओं, जैसे– सती प्रथा, बाल विवाह, बाल हत्या, जातीय भेदभाव आदि को इन आंदोलनों ने अपना निशाना बनाया। भारतीय समाज में बसी हुई अनेकों कुरीतियों तथा कुप्रथाओं को इसके माध्यम से समाप्त करने काफी मदद मिली[10]।

1.4.1 सती प्रथा

भारतीय, मुख्य रूप से हिन्दू समाज में सती प्रथा का जनक यद्यपि प्राचीन काल से माना जाता है, परन्तु इसका भीषण रूप आधुनिक काल में देखने को मिलता है। सती प्रथा का पहला अभिलेखीय साक्ष्य 510 ई. एरण के अभिलेख में मिलता है। 15वीं शताब्दी में कश्मीर के शासक सिकन्दर ने इस प्रथा को बन्द करवा दिया था। बाद में पुर्तगाली गर्वनर अल्बुकर्क ने इस प्रथा को बन्द करवा दिया।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

भारत मे मुगल बादशाह अकबर व पेशवाओं के अलावा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कुछ गर्वनर–जनरलों जैसे लॉर्ड कॉर्नवॉलिस एवं लॉर्ड हेस्टिंग्स ने इस दिशा में कुछ प्रयास किये, परन्तु इस क्रूर प्रथा को कानूनी रूप से बन्द करने का श्रेय लॉर्ड विलियम बैंटिक को जाता है। राजा राममोहन राय ने बैंटिक के इस कार्य में सहयोग किया। राजा राममोहन राय ने अपने पत्र 'संवाद कौमुदी' के माध्यम से इस प्रथा का व्यापक विरोध किया। राधाकान्त देव तथा महाराजा बालकृष्ण बहादुर ने राजा राममोहन राय की नीतियों का विरोध किया। 1829 ई. के 17वें नियम के अनुसार विधवाओं को जीवित जिन्दा जलाना अपराध घोषित कर दिया गया। पहले यह नियम 'बंगाल प्रेसीडेंसी' में लागू हुआ, परन्तु बाद में 1830 ई. के लगभग इसे बम्बई और मद्रास में भी लागू कर दिया गया [(11)]।

1.4.2 बाल हत्या

बाल हत्या की प्रथा राजपूतों में सर्वाधिक प्रचलित थी। वे कन्या के जन्म को अशुभ मानते थे, अतः इनके यहाँ नशीली दवाओं एवं भूखा रखकर कन्याओं को मार दिया जाता था। लॉर्ड हार्डिंग ने 1795 ई. के 'बंगाल नियम' एवं 1804 ई. के नियम–3 से बाल हत्या को साधारण हत्या मान लिया। 1870 ई. में इस दिशा में कुछ कानून बने, जिसके अन्तर्गत बालक–बालिकाओं की सूचना देना अनिवार्य कर दिया गया।

1.4.3 दास प्रथा

भारतीय समाज में दास प्रथा का प्रचलन प्राचीन काल से था। 18 जनवरी, 1823 ई. को लिस्टर स्टैनहोप ने इंग्लैण्ड के ड्यूक ऑफ ग्लोस्टर को दास प्रथा की समाप्ति के लिए एक पत्र लिखा। 1789 ई. की घोषणा द्वारा दासों का निर्यात बन्द कर दिया गया। 1811 ई. एवं 1823 ई. में दासों के सम्बन्ध में कानून बनाए गये। 1833 में अंग्रेजी साम्राज्य में दासता समाप्त कर दी गयी। 1833 ई. में चार्टर एक्ट में दासता को शीघ्र–अतिशीघ्र समाप्त करने के लिए गर्वनर को कानून बनाने को कहा गया। 1843 ई. में समस्त भाग में दासता को अवैध घोषित कर दिया गया। 1860 ई. में 'भारतीय दण्ड संहिता' के अन्तर्गत दासता को अपराध घोषित कर दिया गया।

1.4.5 विधवा पुनर्विवाह

कलकत्ता के 'संस्कृत कॉलेज' के आचार्य ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने इस दिशा में विशेष कार्य किया। उन्होंने विधवा विवाह के समर्थन में लगभग एक हजार हस्ताक्षरों वाला प्रार्थना पत्र तत्कालीन गर्वनर डलहौजी को दिया, जिसके परिणामस्वरूप 1856 ई. में 'हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' द्वारा विधवा विवाह को मान्यता दे दी गई। इस क्षेत्र में केशव कर्वे एवं वीरेसलिंगम पुण्टलु ने भी विशेष कार्य किया। कर्वे महोदय ने पूना में 1899 ई. में एक 'विधवा आश्रम' स्थापित किया। उनके प्रयास से ही 1906 ई. में बम्बई में 'भारतीय महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई। धोंडो केशव कर्वे विधवा पुनर्विवाह संघ के सचिव थे[(12)]।

1.4.6 बाल विवाह

इस क्षेत्र में केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से 1872 ई. में देशी बाल विवाह अधिनियम पास हुआ, जिसमें बाल विवाह पर प्रतिबन्ध लगाने की व्यवस्था की गई। सिविल मैरिज एक्ट (1872 ई.)

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

के अन्तर्गत 14 वर्ष से कम आयु की कन्याओं तथा 18 वर्ष से कम आयु के लड़कों का विवाह वर्जित कर दिया गया। इस अधिनियम के द्वारा बहुपत्नी प्रथा भी समाप्त कर दी गयी।
1891 ई. में ब्रिटिश सरकार ने एस.एस. बंगाली के सहयोग से 'एज ऑफ कंसेट एक्ट' पारित किया। एक्ट के अनुसार 12 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर रोक लगा दी गई। इस एक्ट का लोकमान्य तिलक ने इस आधार पर विरोध किया कि वे इसे भारतीय मामले में विदेशी हस्तक्षेप मानते थे। 1930 ई. में 'शारदा अधिनियम' द्वारा विवाह के लिए लड़की की आयु कम से कम 14 वर्ष और लड़के की 18 वर्ष निश्चित की गई।

1.4.7 स्त्री शिक्षा

हिन्दू शास्त्रों में दी हुई व्यवस्था के आधार पर 19वीं सदी के लोगों में एक गलत मान्यता का प्रचार था कि स्त्रियों को अध्ययन का अधिकार नहीं है, परन्तु सुधार आन्दोलनों के द्वारा इस क्षेत्र में फैली भ्रांति को दूर किया गया। सर्वप्रथम ईसाई धर्म प्रचारकों ने इस क्षेत्र में कार्य करते हुए 1819 ई. में स्त्री शिक्षा के लिए कलकत्ता में एक 'तरुण सभा' की स्थापना की। जेडी. बेथुन ने 1849 ई. में कलकत्ता में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने भी इस क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान कार्य किया। वे बंगाल के लगभग 35 विद्यालयों से जुड़े थे। 1854 ई. के 'चार्ल्स वुड पत्र' में स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर ध्यान दिया गया।
महिलाओं के उत्थान के क्षेत्र में पुरुषों ने प्रयास किये, परन्तु 20वीं शताब्दी तक अपने अधिकारों के लिए महिलायें खुद आगे आने लगीं। 1926 ई. में 'अखिल भारतीय महिला संघ' की स्थापना हुई। देश के आजाद होने के बाद 1956 ई. के 'हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम' में यह व्यवस्था की गई कि पिता की सम्पत्ति में पुत्र के साथ पुत्री भी बराबर की हकदार होगी और इसके साथ ही बहुविवाह, दहेज प्रथा आदि को भी प्रतिबन्धित किया गया। इस तरह 20वीं सदी में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ।

1.5 जातीय वैकल्प निराकरण अधिनियम

उच्च वर्ग के सम्पन्न हिन्दू व्यक्तियों की ईसाई धर्म में परिवर्तित करने में बड़ी बाधा यह थी कि धर्म परिवर्तन से व्यक्ति अपने सम्पत्ति के अधिकारों से वंचित हो जाता था। कालान्तर में ब्रिटिश सरकार ने इस बाधा को समाप्त कर दिया, जिससे हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन के लिए प्रोत्साहन मिला, परन्तु इस अधिनियम का हिन्दुओं ने जमकर विरोध किया। 20वीं शताब्दी में सामाजिक सुधार के लिए चलाये गये कुछ अन्य आंदोलनों में 1887 ई. में महादेव गोविन्द रानाडे द्वारा 'भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन, 1903 ई. में 'बम्बई समाज सुधारक सभा' एवं एनी बेसेन्ट द्वारा हिन्दू सम्मेलन की स्थापना की गई [(13)]।

1.6 जाति प्रथा का विरोध एवं अछूतोद्धार आन्दोलन

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में व्याप्त इस कुप्रथा में सुधार के लिए आधुनिक काल में कुछ प्रयास अवश्य किये गये। गांधी जी ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने अछूतों के लिए 'हरिजन' (भगवान का जन) शब्द प्रयोग किया और 'हरिजन' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया। उन्होंने हरिजनों के कल्याण के लिए 1932 ई. में 'हरिजन सेवक संघ'

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

नामक संस्था की स्थापना की। संभवतः गांधीजी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने हरिजन समस्या की ओर जनसाधारण का ध्यान खीचा। निम्न जाति या कुल में पैदा हुए डॉक्टर भीमराव अम्बेडकरजीवन भर जाति प्रथा तथा छुआछूत से लड़ते रहे। इन्होंने 'ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन' (अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ) की स्थापना की।

1906 ई. में बी.आर.शिंदे के नेतृत्व में बम्बई में 'डिप्रेस्ड क्लास मिशन सोसइटी' की स्थापना की गई। मद्रास में 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन सोसाइटी' की स्थापना 1909 ई. में की गई। दक्षिण भारत में 1920 ई. में ई.वी. रामास्वामी नायकर के नेतृत्व में 'आत्मसम्मान आंदोलन' चलाया गया। मद्रास के ब्राह्मण विरोधी संगठन प्रजा मित्र मंडली के संस्थापक सी.आर. रेड्डी थे। दक्षिण भारत के 'आत्मसम्मान आंदोलन' ने 1925 ई. में बिना ब्राह्मण के सहयोग से शादी, जबरन मंदिर प्रवेश, नास्तिकवाद एवं मनुस्मृति को जलाने का तर्क दिया। सी.एन. मुदालियार, टी.एम. नायर एवं पी.टी. चेट्टी के नेतृत्व में दक्षिण में 'जस्टिस पार्टी' की स्थापना की गई। पहले इस पार्टी को 'साउथ इंडियन लिबरल एसोसिएशन' के नाम से जाना जाता था। बंगाल में 1899 ई. में जाति निर्धारण सभा की स्थापना की गई। केरल में एझवा आंदोलन के अन्तर्गत इस आंदोलन के नेताओं द्वारा 1903 ई. में 'श्रीनारायण धर्म परिपाल योगम' की स्थापना की गई[14]।

1.7 सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधार आंदोलन के कारण

1.7.1 आन्दोलनों का परिणाम

आधुनिक भारत में सुधारवादी धार्मिक आंदोलनों के परिणामस्वरूप भारत के लोगों में आत्म–सम्मान, आत्म–विश्वास एवं राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। धर्म के क्षेत्र में व्याप्त अंध विश्वास को दूर करने में सहयोग मिला और साथ ही भारतीय समाज में मानवीय गुण एवं नैतिकता का लोगों में विकास हुआ। सुधारवादी धार्मिक आंदोलनों का एक प्रभाव यह रहा कि भारतीयों में पश्चिमी चमक–दमक के प्रति आकर्षण एवं आधुनिकीकरण की प्रकृति को प्रोत्साहन मिला। इन सुधारवादी आंदोलनों में सर्वाधिक महत्व स्त्री मुक्ति, शिक्षा एवं सम्मान के अधिकारों में वृद्धि एवं छुआछूत की परम्परा को समाप्त करने को दिया गया।

19वीं–20वीं सदी में चले इन सुधारवादी धार्मिक आंदोलनों ने शहरी उच्च एवं मध्यम वर्ग को सर्वाधिक प्रभावित किया। आधुनिक भारत का यह आंदोलन अपनी व्यापकता के बाद भी कुछ निश्चित सीमा में ही रह गया। उसे अतीत को देखने, अतीत की उत्कृष्टता की दुहाई देने तथा धर्म ग्रंथों के प्रमाण पर जाने की आदत सी थी। अतीत में 'स्वर्ण युग' खोजने की भावना से आधुनिक विज्ञान को पूर्ण रूप से स्वीकार करने में बाधा उत्पन्न हुई। इन प्रवृत्तियों ने हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख तथा ईसाई को आपस में बांट दिया। ऊंची जाति के हिन्दू निम्न जाति के हिन्दू से अलग–थलग पड़ गये। सुधारकों ने भारत के मध्यकालीन इतिहास को अवनति के काल के रूप में देखा ।

राजनैतिक एकता: ब्रिटिश शासन के विस्तार और एकत्रीकरण के कारण भारत राजनैतिक रूप से एकजुट था। इसने भारतीयों की कई सामान्य समस्याओं को समझा। ब्रिटिश शासन की

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

प्रकृति ने कई युवा भारतीयों को उनके दुख और पतन के कारणों का पता लगाने के लिए उकसाया ।

ईसाई मिशनरियों के प्रचार के खिलाफ प्रतिक्रियाः ईसाई मिशनरियों ने ईसाई धर्म को विशेष रूप से गरीबों और शोषितों के बीच फैलाने के लिए सभी संभव प्रयास किए। इस उद्देश्य के लिए शैक्षणिक संस्थानों, अस्पतालों, दान सेवाओं और आधिकारिक सहायता का भी उपयोग किया गया। इसलिए, हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने अपने धर्मों की रक्षा के लिए प्रयास किए

विदेशी विद्वानों का योगदानः मैक्स मुलर और विलियम जोन्स जैसे कई पश्चिमी विद्वानों ने भारत के अतीत को फिर से खोजा।

पश्चिमी शिक्षाः पश्चिमी शिक्षा के प्रसार से लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता और राष्ट्रीयता की पश्चिमी अवधारणाओं का प्रसार हुआ। विदेश जाने वाले भारतीय इन अवधारणाओं के कार्य में सीधे संपर्क में आए। अपनी वापसी के बाद वे ऐसी अवधारणाओं के बारे में भारतीयों में जागरूकता की कमी को देखने के लिए पीड़ित थे। उन्होंने इस तरह के विचारों के प्रसार के लिए कुदाल चलाने का काम किया। इस तथ्य से कोई इंकार नहीं है कि भारतीय राष्ट्रवाद और आधुनिकतावाद काफी हद तक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अंग्रेजी शिक्षित भारतीयों के प्रयासों का परिणाम है [15]।

1.8 19वीं शताब्दी में राजनैतिक चेतना का विकास

19वीं सदी में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलनों से भारतीय राष्ट्रीयता के विकास का एक नया युग प्रारम्भ होता है। इस समय समाज को सती प्रथा, जाति प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, मूर्तिपूजा, छुआछूत एवं बहुदेववाद आदि बुराइयों ने दूषित कर रखा था, जबकि विभिन्न आडम्बरों के कारण धर्म भी संकीर्ण होता जा रहा था। इस समय ईसाई मिशनरियों द्वारा किए जा रहे प्रचार कार्य के कारण लोगों का ध्यान ईसाई धर्म की तरफ आकृष्ट हो रहा था तथा वे हिन्दू धर्म के प्रति उदासीन होते जा रहे थे। इस समय देश में पुनर्जागरण हुआ तथा विभिन्न सुधारकों ने देश की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति में अनेक सुधार किए, जिसके कारण आधुनिक भारत के निर्माण को प्रोत्साहन मिला।

आनन्द मोहन बोस, शिवनाथ शास्त्री, विजय कृष्ण गोस्वामी आदि ने केशवचन्द्र सेन से मतभेद होने पर साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की। इसने समाज एवं धर्म में महत्त्वपूर्ण सुधार किए। इसके प्रयासों से कलकत्ता में एक स्कूल की स्थापना की गई, जो आगे चलकर सिटी कॉलेज ओफ कलकत्ता के नाम से विख्यात हुआ। इस समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए तत्त्व कौमुदी नामक बांगला एवं ब्रह्म पब्लिक ओपिनियन नामक अंग्रेजी समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। इसने 1884 ई. में संजीवनी नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया तथा 1880 ई. में ब्रह्म बालिका नामक स्कूल की स्थापना की।

यद्यपि आज ब्रह्म समाज लगभग लुप्त हो चुका है, किन्तु फिर भी धर्म तथा समाज सुधार के क्षेत्र में इसका योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता। इसने प्रेस की स्वतन्त्रता पर बल देकर भारतीयों में राष्ट्रीयता की एक नई भावना जागृत की [16]।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

जहाँ राजा राममोहन राय पर पाश्चात्य संस्कृति एवं अंग्रेजी भाषा का प्रभाव था, वहीं स्वामी दयानन्द सरस्वती हिन्दू धर्म एवं भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभावित थे। उनका उद्देश्य हिन्दू धर्म में व्याप्त बुराइयों को दूर करते हुए एक बार पुनः उसकी श्रेष्ठता स्थापित करना था। उन्होंने मूर्तिपूजा का डटकर विरोध किया। वेदों में आस्था होने के कारण उन्होंने वेदों की तरफ लौटो का नारा दिया। उन्होंने सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर हिन्दू धर्म का प्रचार किया तथा विभिन्न विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्कृत के महान विद्वान थे। 1822 ई. में उन्होंने ब्रह्म समाज के साथ मिलकर कार्य करने का प्रयास किया, किन्तु प्रयास विफल रहा, क्योंकि ब्रह्म समाज के सदस्यों का वेदों की प्रामाणिकता तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त में कोई विश्वास नहीं था एवं उनका झुकाव पाश्चात्य संस्कृति तथा ईसाई धर्म की तरफ था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने केशवचन्द्र सेन के परामर्श पर संस्कृत भाषा के स्थान हिन्दी भाषा में अपने विचारों का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। स्वामीजी ने 10 अप्रेल, 1875 ई. को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। यहाँ से दिल्ली गए, जहाँ सत्य की खोज हेतु हिन्दू, ईसाई एवं मुस्लिम धर्म प्रचारकों का सम्मेलन बुलाया गया था। इस सम्मेलन में दो दिन तक वाद–विवाद होता रहा, किन्तु सम्मेलन किसी निर्णय पर न पहुँच सका। स्वामी जी ने इसके बाद पंजाब में जाकर अपने विचारों का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप पंजाब में स्थान–स्थान पर आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित हुए। इसके बाद वे ग्वालियर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात आदि स्थानों पर आर्य समाज का प्रसार किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तीन ग्रन्थों की रचना की–

1. प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य में उन्होंने वेदों के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए।
2. द्वितीय ग्रन्थ में वेद भाष्य में उन्होंने ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के सम्बन्ध में टीका लिखी।
3. स्वामी दयानन्द का तीसरा ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश था, जो बहुत अधिक प्रसिद्ध है।

1.9 आर्य समाज के सुधार

आर्य समाज के निम्नलिखित सुधार किए–

(1) सामाजिक सुधार

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान् सामाजिक सुधारक थे। उन्होंने बाल विवाह, बहु विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, जाति प्रथा, छुआछुत, अशिक्षा आदि का विरोध करते हुए स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह एवं अन्तर्जातीय विवाह पर बल दिया।

(2) शुद्धि आन्दोलन

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शुद्धि आन्दोलन चलाया। ऐसे हिन्दू को बलपूर्वक ईसाई अथवा ईस्लाम धर्म में परिवर्तित कर दिए गए थे एवं जो पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण करना चाहते थे, उन्हे शुद्ध कर हिन्दू धर्म की दीक्षा दी जाती थी। यह आन्दोलन शुद्धि आन्दोलन कहलाया। दिनकर ने लिखा है, यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जागृत हिन्दुत्व का समरनाद था। इसके फलस्वरूप लाखों हिन्दूओं ने, जिन्होंने इस्लाम तथा ईसाई मत धारण कर लिया था वो पुनः

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

हिन्दू बन गए। इस प्रकार इन आन्दोलन ने हिन्दू धर्म की रक्षा की। आगे चलकर हिन्दू समाज के उद्धार का कार्य लाल हंसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने किया ।

(3) धार्मिक सुधार

दयानन्द ने हिन्दू धर्म में व्याप्त मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, बलि प्रथा, प्रचलित मत–मतान्तरों, अवतारवाद, आडम्बरों, अन्धविश्वास आदि की आलोचना करते हुए एकेश्वरवाद, यज्ञ, हवन, मंत्रपाठ इत्यादि पर बल दिया। उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति सत्कर्म, ब्रह्मचर्य एवं ईश्वर की उपासना का सहारा लेकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। स्वामी जी का मानना था कि वैदिक धर्म श्रेष्ठतम् है क्योंकि यह वेदों पर आधारित है, जो ईश्वरीय देन है, उन्होंने ईसाई धर्म तथा इस्लाम के साथ–साथ हिन्दू धर्म की बुराइयों पर भी प्रकाश डाला। मृतकों के श्राद्ध का विरोध करते हुए कहा कि परलोक में मृतक की आत्मा की शान्ति हेतु यहाँ दान देना एवं भोजन करवाना मूर्खता है। इस प्रकार आर्य समाज ने हिन्दू धर्म में सुधार करते हुए उसकी पुनः श्रेष्ठता स्थापित करने की कोशिश किया ।

(4) साहित्यिक तथा शैक्षणिक देन

साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी जी का योगदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने हिन्दी भाषा में अनेक ग्रन्थों की रचना की। वे संस्कृत के महत्त्व को पुनः स्थापित करना चाहते थे तथा स्त्रियों को शिक्षा दिए जाने के प्रबल समर्थक थे। वे प्राचीन गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे, ताकि विद्यार्थी उचित ढंग से शिक्षा प्राप्त कर सके। वे शिक्षण संस्थाओं में सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार किए जाने के समर्थक थे ।

(5)राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके दो प्रमुख नारों भारत भारतीयों का है तथा वैदिक सभ्यता को अपनाने मे भारतीयों में एक नया उत्साह भर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू समाज में नवचेतना का संचार किया और हिन्दुओं में आत्म–सम्मान की भावना जागृत की। उन्होंने हिन्दुओं को यह बताया कि उनकी संस्कृति विश्व की प्राचीन और पुरानी संस्कृति है। इस पर वे अपनी संस्कृति पर गर्व करने लगे। आर्य समाज ने नमस्ते शब्द को प्रचलित किया, जो आज भी भारत तथा विदेशों में लोकप्रियता प्राप्त किए हुए है। स्वामी जी ने भारतवासियों में भी राजनैतिक चेतना जागृत की।

1.10 थियोसोफिकल सोसायटी के मुख्य सिद्धांत

थियोसोफिकल सोसायटी भी एक प्रमुख सुधारवादी आन्दोलन था। थियोसोफी शब्द ग्रीक भाषा के थियो व सोफी शब्दों से मिलकर बना है। थियो का अर्थ ईश्वर एवं सोफी शब्द का अर्थ ज्ञान होता है। इसकी स्थापना सर्व प्रथम रूसी महिला ब्लेवाट्स्की एवं अमेरिकन कर्नल एच. एस. आलकाट ने 7 सितम्बर, 1875 ई. को अमेरिका के न्यूयार्क नगर में की। इसके प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार थे[18]।

(1) प्रथम उद्देश्य प्रकृति के नियमों की खोज करना एवं जनता में दैवी शक्ति में विश्वास उत्पन्न करना था। इसका मानना था कि देवता हिमालय में निवास करते हैं एवं मनुष्य के भाग्य के निर्माण करते हैं। पुनर्जन्म में भी इनका विश्वास था।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

(2) सभी धर्मों के साथ सहिष्णुता का व्यवहार करते हुए उनमें समन्वय स्थापित करना।
(3) प्राचीन धर्म, दर्शन एवं ज्ञान का अध्ययन तथा प्रसार करना।
(4) विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त में विश्वास करना तथा ब्रह्मा को सारी सृष्टि का निर्माता मानना।
(5) पूर्वी देशों के धर्मों एवं दर्शनों का अध्ययन तथा प्रसार करना।
1879 ई. में ब्लेवाट्स्की तथा आर्ल्काट स्वामी दयानन्द के निमन्त्रण पर भारत आए। उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म विश्व का श्रेष्ठतम् धर्म है तथा सम्पूर्ण सत्ता इसी में निहित है। कर्नल आर्ल्काट ने अपनी सोसायटी का उद्देश्य भारतीयों को उनकी संस्कृति के गौरव तथा महानता का स्मरण करवाना बताया, ताकि भारत पुनः अपनी खोयी हुई प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। इस सोसायटी के संस्थापक ने 1879 से 1881 तक स्वामी दयानन्द के साथ मिलकर भारत में ईसाई धर्म के बढ़ते प्रसार को रोकने का प्रयास किया, किन्तु यह प्रयास अधिक समय तक न चल सका, क्योंकि जहां दयानंद वेदों को प्रामाणिक तथा ईश्वरीय ज्ञान मानते थे, वहीं थियोसोफिकल सोसायटी के प्रवर्तक इससे सहमत नहीं थे।
अतः इन्होंने 1886 ई. में मद्रास के समीप अडयार नामक स्थान पर थियोसोफिकल सोसायटी का केन्द्र स्थापित किया एवं भारत में अपने विचारों का प्रचार करना आरम्भ किया।
इस सोसायटी की एक प्रमुख सदस्य श्रीमती एनी बेसेंट 1893 में भारत आईं । वह इस समाज की अध्यक्ष बनीं। उसने खुद को हिंदू धर्म के पुनरुद्धार के लिए समर्पित कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी गतिविधियाँ अधिक महत्वपूर्ण थीं। उन्होंने वाराणसी में केंद्रीय हिंदू कॉलेज की स्थापना की जिसे अंततः वाराणसी हिंदू विश्वविद्यालय में मिला दिया गया। उनके पेपर ''न्यू इंडिया'' ने थियोसोफिकल विचारों को फैलाया। बाद में उसने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन को गति देने के लिए होम रूल आंदोलन शुरू किया [19]।

1.11 सुधार आंदोलनों के प्रभाव

1. सुधार आंदोलनों से समाज और धर्म में महत्वपूर्ण बदलाव आए। प्रारंभ में महान परिवर्तनों ने लोगों के एक छोटे समूह को प्रभावित किया, लेकिन धीरे–धीरे ये विचार लोगों के कई वर्गों में फैल गए,
2. सुधार आंदोलनों ने हिंदू और मुस्लिम धर्मों को मजबूत किया और उनके बीच सामाजिक बुराइयों को दूर करने के प्रयास किए,
3. पढ़े–लिखे भारतीयों ने यथोचित सोचना शुरू कर दिया,
4. सुधार आंदोलनों ने पिछले गौरव के पुनरुद्धार में मदद की। उन्होंने एक आधुनिक भारत बनाने में भी मदद की,
5. इसने विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य की प्रगति को बढ़ावा दिया,
6. जाति व्यवस्था ने समाज पर अपनी पकड़ खोनी शुरू कर दी,
7. महिलाओं की मुक्ति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। उनकी स्थिति को बढ़ाने के लिए कुछ कानूनी उपाय पेश किए गए,
8. विदेश यात्रा करने के लिए, जिसे पहले पाप माना जाता था, स्वीकार कर लिया गया था,

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

9. सुधार आंदोलनों ने एक मध्यम वर्ग का उदय किया[20] जिसमें शिक्षकों, डॉक्टरों, वकीलों, वैज्ञानिकों और अलग– अलग क्षेत्रों में भारत की प्रगति में मदद करने वाले पत्रकार शामिल थे, और

10. सुधार आंदोलनों ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में भी योगदान दिया क्योंकि सुधार गतिविधियों ने पूरे भारत में लोगों को एकजुट किया और एकता की भावना पैदा की।

निष्कर्ष

आर्य समाज की स्थापना 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों को समाप्त कर वेदों के शुद्ध रूप को पुनः स्थापित करना था। आर्य समाज ने 19वीं शताब्दी के भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण सुधार किए, जिनका प्रभाव सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में देखा जा सकता है। आर्य समाज ने 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज में महत्वपूर्ण सुधार किए, जिनका प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। उनके सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधारों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया और एक आधुनिक, प्रगतिशील और समतामूलक समाज की नींव रखी। आर्य समाज का योगदान भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और उनके सिद्धांत और सुधार आज भी प्रासंगिक हैं। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में की थी। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करना और वेदों की शुद्ध शिक्षा को पुनः स्थापित करना था। आर्य समाज ने 19वीं शताब्दी में कई महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधार किए, जिनका प्रभाव भारतीय समाज पर व्यापक रूप से पड़ा।

सन्दर्भ

[1]. Madhu Kishwar, "The Daughters of Aryavarta: Women in the Arya Samaj movement, Punjab." Chapter in Women in Colonial India; Essays on Survival, Work and the State, edited by J. Krishnamurthy, Oxford University Press, 1989.
[2]. Rai L. (1915) The Arya Samaj: an Account of its Aims, Doctrine and Activities, with a Biographical Sketch of the Founder D.A.V. College Managing Committee, New Delhi ISBN 978-81-85047-77-5.
[3]. Rai L. (1993) A History of the Arya Samaj New Delhi ISBN 81-215-0578-X.
[4]. Ruthven M. (2007) Fundamentalism: a Very Short Introduction Oxford University Press ISBN 978-0-19-921270-5.
[5]. Sharma J. M. (1998) Swami Dayanand: a Biography USB, India ISBN 81-7476-212-4.
[6]. Upadhyaya G. P. (1954) The Origin, Scope and Mission of the Arya Samaj Arya Samaj.
[7]. Shastri V. (1967) The Arya Samaj Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha.
[8]. Pandit S. (1975) A Critical Study of the Contribution of the Arya Samaj to Indian EducationSarvadeshik Arya, Pratinidhi Sabha.
[9]. http://adhunikbhartkaitihaas.blogspot.com/2016/05/religious-and-social-reform-movement.html

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 3 Issue: 1
July 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

[10]. https://gyanpradayani.blogspot.com/2018/02/blog-post_54.html
[11]. डॉ0 एके0 मित्तल भारत का सामाजिक एवं सा स्कृतिक इतिहास, साहित्य भवन पब्लिकेसन्श आगरा, वर्ष 2006 पृ0– 66–177–80
[12]. अवस्थी एवं अवस्थी, 1976 – आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन
[13]. सरकार, सुमित, 1984– आधुनिक भारत, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड
[14]. चन्द्र, विपिन, 2002– आधुनिक भारत, पेगुन प्रकाशन
[15]. बिरमानी, आर.सी., 2009 – भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद गीतांजलि प्रकाशन
[16]. मजुमदार, बी.बी., 1998– भारत में आतंकवादी राष्ट्रवाद और उसके सामाजिक–धार्मिक पृष्ठभूमि
[17]. राय. हिमांशु (संपा), 2003 – भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद एक अध्ययन हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
[18]. https://www.indiaolddays.com/history-of-theosophical-society-and-annie-besant/
[19]. Theosophical movement 1875 - 1950 (39ff.)
[20]. https://www.facebook.com/politicalscienceguru/posts/552720958215274/

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

गोपाल चौधरी ,
प्रो. (डॉ.) दिनेश मंडोत

*****